* जल संरक्षण *

Date
24/8/2019.

एवं संग्रहण

* राज्य में मानसून की अनियमितता व न्यूनतम वर्षा होने के कारण राजस्थान के अधिकांश भागों में विभिन्न विधियों व पद्धतियों के माध्यम से जल संरक्षण व संग्रहण किया जाता आ रहा है।

(पश्चिमी राजस्थान में)
* राज्य का लगभग 60.4 % भाग आंतरिक प्रवाह के अंतर्गत गिना जाता है। जिस भाग में बारहमासी नदियाँ न के बराबर मिलती है।

* जल संरक्षण व संग्रहण से संबंधित प्रमुख विधियाँ ⇒

1. नाडी ⇒ यह एक प्रकार का छोटा तालाब होता है, जिसमें वर्षा जल का संग्रहण किया जाता है। इसके जल का उपयोग अधिकांशः पशुओं और सिंचाई में होता है।

* नाडी में जलसंग्रहण करने से भूमिगत जल स्तर में वृद्धि होती है।

2. बावड़ी ⇒ यह आयताकार सीढ़ीनुमा वृहद् कुआं होता है। जिसमें वर्षा जल संग्रहण के साथ भूमिगत जल का भी संग्रहण होता है।

* प्राचीन काल में इस विधि का सर्वाधिक उपयोग राजा-महाराजाओं द्वारा किया गया।

* चांदबावड़ी – आभानेरी (दौसा)
* रानी जी की बावड़ी – बूंदी (बावड़ियों का शहर)

1660 मे निर्मित जोधपुर का महामंदिर का झालरा प्रसिद्ध था।

* खड़ीन टोंक जिले मे पालीवाल ब्राह्मणो द्वारा प्रचलित की गई।

गाड़ी-चौड़ी
टोला - गहरा

3. टोबा ⇒ यह नाडी का ही छोटा रूप है। जिसमे जल अधिक समय तक संग्रहीत रहता है।

* यह विधि पश्चिमी राजस्थान में प्रचलित है।

4. खड़ीन ⇒ खड़ीन पश्चिमी पश्चिमी राजस्थान की प्राचीन व प्रचलित जल संग्रहण की विधि है। जिसके तरह वर्षा जल का संग्रहण किया जाता है।

* खड़ीन के जल के सूखने के पश्चात शेष उपजाऊ मिट्टी के भाग में कृषि की जाती है जिसे खड़ीन कृषि कहा जाता है।

5. टाँका ⇒ यह वर्षा जल संग्रहण प्राचीन व
या टंक
प्रचलित विधि है। जिस विधि का सर्वाधिक प्रयोग पश्चिमी राजस्थान में है।

* पश्चिमी राजस्थान में टांकों का निर्माण घर या सार्वजनिक स्थलों पर किया जाता है।

* टांकों के जल का उपयोग मुख्यत: पेयजल में किया जाता है।

6. जोहड़ → शेखावाटी क्षेत्र में वर्षा जल संग्रहण की प्रचलित विधि है।

* इनका आकार सामान्यत: टांके के समान ही होता है किन्तु यह ऊपर से अधिक खुला हुआ बनाया जाता है।

7. झालरा ⇒ इनका निर्माण प्राचीन काल में राजाओं
धार्मिक
द्वारा करवाया गया था।

* झालरा अपने से ऊंचे तालाबों या झीलों के समीप बनाया जाता था।

* इसके जल का उपयोग धार्मिक अनुष्ठान व सामूहिक स्नान में किया जाता था।
* * जोधपुर मेहरानगढ़ का झालरा प्रसिद्ध है।

8. कुंई / बेरी / कुवड़ी ⇒ यह कुंए से छोटा व कम गहराई वाला गर्त होता है। जिसमे भूमिगत जल का संग्रहण किया जाता है।

* इसके जल का उपयोग मुख्यत: पेयजल में होता है।

9. कुँआ ⇒ यह वृहद आकार का एक गहरा गर्त होता है। जिसमे वर्षा जल के साथ-साथ भूमिगत जल का संग्रहण होता है। कुआँ कहलाता है।

* इसके जल का उपयोग मुख्यत: सिंचाई में किया जाता है।

10 झील ⇒ यह वर्षा जल / बहते हुए जल के लिए महत्वपूर्ण स्रोत है।
* जिसमे आस-पास स्थित ऊँची भूमि का जल आकर संग्रहित होता है।
* इसके जल का उपयोग पशुओं के लिए पेयजल व सिंचाई में होता है।

11 रैन हार्वेस्टिंग विधि ⇒ इसके तहत वर्षा जल का संग्रहण निम्न प्रकार से किया जाता है

→

1. छत के पानी को पाइप के माध्यम से सीधे धरातल पर कुएं में उतार दिया जाता है। जिससे भूमिगत जलस्तर मे वृद्धि होती है।

2. छत के जल को किसी टैंक में उतारकर उसके पानी का

उपयोग पशुओं के लिए किया जाता है।

3. छत के जल को टैंक में उतारकर संग्रहित किया जाता है।
→ इस जल को अन्य टैंक में एकत्रित कर इसका उपयोग सीधे पेयजल में किया जाता है।